राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा

वर्ष १३ अंक १ जनवरी-जून २०११

1.**"समाजशास्त्रीय अध्ययन के उन्मेष"**–प्रोफेसर श्यामधर सिंह, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

अपने वर्तमान स्वरूप में समाजशास्त्रीय अध्ययन के दो उन्मेष (ओरिएन्टेशन) हैं : वैज्ञानिक एवं मानवतावादी। अठारहवीं शताब्दी में समाजशास्त्रीय चिन्तन-जगत् में विज्ञानवाद एक ऐसे आन्दोलन के रूप में उभरा जिसके आधार पर समाजशास्त्रियों ने मानव समाज का वैज्ञानिक अध्ययन कर सामाजिक विज्ञानों के सोपानवत वर्गीकरण में एक विशिष्ट एवं उच्चतम स्थान प्राप्त किया। समाजशास्त्र में आगस्त कोंत वे प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने वैज्ञानिक दर्शन के पूर्ण व्यस्थितीकरण का तथा मानव ज्ञान की सभी वस्तुओं तक इसके वैज्ञानिक विस्तारण का प्रयास किया है। तथ्यतः आगस्त कोंत ने समाज के एक विज्ञान की रचना का श्रीगणेश किया था जो इसके साथ ही अपनी सम्पूर्ण तात्विक विशेषताओं में प्रगति का एक सिद्धान्त था। इस दिशा में वर्तमान युग में समाजशास्त्र का लक्ष्य समाज में अन्तर्निहित प्रघटनाओं का उनकी व्यावहारिक आनुभविक पृष्ठभूमि में अध्ययन कर उसे सैद्धान्तिक परिपक्वता के शीर्ष सोपान तक पहुंचाना है। किन्तु इसके विरोध में सम्प्रति मानवतावादी समाजशास्त्र का आविर्भाव हुआ है जिसका उन्मेष मानवता की सेवा में सामाजिक विश्लेषण करना है। इससे समाजशास्त्रीय अध्ययनों के वैज्ञानिक उन्मेष में एक नवीन क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्रीय उन्मेष जो भूमण्डलीय स्तर पर समाजशास्त्र के अरूणोदय काल से लेकर १९७० तक अपना प्रभुत्व जमाये रहा है, उसके विरोध में कुछ ऐसी नवीन चिन्तन धाराएं एवं सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य विकसित हुए, जिनके परिणामस्वरूप विज्ञानवादी चिन्तनधारा को समाजशास्त्रियों में नकारने की प्रवृत्ति उभरकर सामने आयी है। यही कारण है कि समकालीन समाजशास्त्रीय जगत् में प्रत्यक्षवादी चिन्तनधारा के प्रवाह को रोकने के संदर्भ में परम्परागत समाजशास्त्र को एक नया स्वरूप व दिशा प्रदान करने के संदर्भ में कतिपय विशिष्ट सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य प्रकट हुए हैं, यथा ज्ञान का समाजशास्त्र, प्रघटनाशास्त्र, लोकविधिविज्ञान, प्रतीकात्मक अन्तक्रियावाद, संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद, संरचनाकरण तथा उग्रसुधारवाद इत्यादि। ये सभी सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य परम्परागत या प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र से ऐसे कई बिन्दुओं पर भिन्न मत प्रकट करते हैं तथा उसकी दिशा को भिन्न दिशा में ले जाना चाहते हैं। यह भिन्न दिशा ही मानवतावादी उन्मेष की आधारपीठिका है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत इन दोनों उन्मेषों की विस्तृत व्याख्या तथा समाजशास्त्र में दोनों की विधियों एवं वैचारिक स्थितियों को प्रयुक्त किये जाने पर बल दिया है।

2.**"पर्यावरणीय चुनौतियाँ और वैदिक संस्कृति"**–डॉ. गिरीश चन्द्र पाण्डेय, व्याख्याता, स्नातकोत्तर गाँधी विचार विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)

वैदिक संस्कृति मानव तथा प्राकृतिक शक्तियों के पारस्परिक अंतर्संबंध पर बल देती है। वैदिक संस्कृति यह दृष्टि देती है कि सृष्टि के घटक तत्वों से मिलकर ही मानव का निर्माण हुआ है तथा सृष्टि के कण-कण में ब्रह्म परिव्याप्त है। मानव यदि अपने घटक तत्वों से सौहार्दपूर्ण संबंध रखे तो पर्यावरण संकट जैसी अपेक्षाओं से बचा जा सकता है। प्रस्तुत लेख में यह दर्शाया गया है कि वैदिक संस्कृति के आधारभूत ग्रंथ वेदों से ऐसे अनेकानेक दिशा निर्देश प्राप्त होते हैं जिनका अनुपालन करके मानव पर्यावरणीय संकटों से मुक्त हो सकता है।

3.''धार्मिक विश्वास और आर्थिक विकास''-प्रोफेसर जसपाल सिंह, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग गुरू नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)

धार्मिक विश्वास और सामाजिक-आर्थिक विकास के बीच सहसंबंध की विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग व्याख्या प्रस्तुत की है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत धार्मिक विश्वास और सामाजिक परिवर्तन के सहसंबंध के संबंध में तीन प्रमुख विद्वानों एमाइल दुर्खेइम (म्उपसम क्नतीमपउ) कार्ल मॉर्क्स (ज्ञंतस डंतग) तथा माक्स वेबर (डंग ॅमइमत) के विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

4.''महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन''-डा० राकेश सिंह नेगी, परियोजना अधिकारी महिला अध्ययन, राजनीति विज्ञान विभाग, हे.न.ब., केन्द्रीय गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड)

देश की जनसंख्या साथ ही मतदान का ५० प्रतिशत प्रतिनिधित्व करने के बावजूद महिलाओं को आज तक निर्णय निर्माण प्रक्रिया में उनकी संख्या के अनुरूप भागेदारी प्राप्त नहीं हो सकी है। यह इस तथ्य का प्रतीक है कि उनमें राजनीतिक जागरूकता काफी कम रही है। क्योंकि संविधान के द्वारा महिलाओं को भी अपनी भागीदारी सुनिचित करने के लिए समान अधिकार एवं विशेष प्रावधान किए हैं जिनका प्रयोग महिलाओं द्वारा अपनी राजनीतिक सक्रियता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। प्रस्तुत लेख महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता की स्थिति उसमें अभाव के कारणों, इसमें वृद्धि हेतु किए गए प्रयासों एवं सुझावों को प्रकाशित करने का एक प्रयास रहा है।

5.''बालश्रम की शैक्षणिक सम्बद्धता के वेदनामूलक पक्ष(सहरिया जनजाति पर आधारित एक माजशास्त्रीय विवेचन)''-डा० कान्ता मीणा,व्याख्याता समाजशास्त्र, सत्य साधना महाविद्यालय, टोडाभीम, करौली (राज.)

किसी देश का बाल-समाज जितना स्वस्थ, शिक्षित, सशक्त, क्रियाशील एवं अनुशासित होगा, वह समाज उतना ही उन्नतिशील होगा। किन्तु वर्तमान विश्व में औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप बाल श्रम की समस्या एक सामाजिक बुराई के रूप में विश्वस्तरीय हो चुकी है। भारत में बाल श्रम की समस्या अपने विकराल रूप में विद्यमान है। प्रस्तुत लेख राजस्थान के बारा जनपद की सहारिया जनजाति में बालश्रम की शैक्षणिक सम्बद्धता के वेदनामूलक पक्षों का विश्लेषण तथा इस समस्या के समाधान हेतु सुझाव करने का एक प्रयास कहा जा सकता है।

6.''बन्द दरवाजों के पीछे : स्त्री और घरेलू हिंसा''-डा० मनोज छापड़िया, असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र, का.सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, फैजाबाद (उ.प्र.)

नारी को सुख व सुरक्षा प्रदान करने के बदले में पुरूष वर्ग ने नारी से जो मूल्य लिया है उसने नारी की सामाजिक समता, सामाजिक अन्तर्चेतना व अन्तरात्मा को झकझोर कर रख दिया है। पुरूष अधिशासित सामाजिक व्यवस्था में नारी को तिरस्कृत किया जाता है, नारी का शोषण, उसकी उपेक्षा एवं अपमान और यहां तक कि नारी के साथ अमानवीय, पशुवत एवं हिंसात्मक व्यवहार किया जाता है। उसे मारा जाता है, पीटा जाता है, भूखा रखा जाता है तथा उसका शारीरिक एवं मानसिक उत्पीड़न किया जाता है। प्रस्तुत लेख स्त्री और घरेलू हिंसा की अवधारणात्मक व्याख्या, कारण और परिणामों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

7.''भूमंडलीकृत भारत का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य''-डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह, रीडर, समाजशास्त्र विभाग महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

भूमण्डलीकरण ने भारत में समाज व संस्कृति के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों में कभी भविष्य के खतरे की आहट सुनाई देती है तो कभी इसमें एक नये भविष्य गढ़ने का सुखद अहसास परिलक्षित होता है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत भारतीय समाज में भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप तीव्र गति से हो रहे, समस्त सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

8.''आकर्षण एवं उपभोग के बदलते प्रतिमान : समाजशास्त्रीय अध्ययन''–डॉ० यू० बी० सिंह , अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, फीरोजगांधी कॉलेज, रायबरेली (उ.प्र.), श्वेता श्रीवास्तव, शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग, फीरोजगांधी कॉलेज, रायबरेली (उ.प्र.)

सांप्रत भारतीय समाज में आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण, नवीन प्रौद्योगिकी आदि के फलस्वरूप लोगों विशेषतः युवा वर्ग के विचारों, व्यवहारों, रूचियों एवं आदतों में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे हैं। महाविद्यालयी छात्र-छात्राओं के अध्यन पर आधारित प्रस्तुत लेख के अंतर्गत उनके आकर्षण एवं उपभोग करने के बदलते प्रतिमानों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

9.''महिलाओं में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के प्रति जागरूकता (भोटिया जनजाति की महिलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन) ''–डा० बी० सी० शाह, प्रवक्ता, बी०एड० विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर, चमोली (उत्तराखण्ड), डा० गीता शाह , प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर, चमोली (उत्तराखण्ड)

महिलाएं परिवार एवं समाज का अभिन्न एवं अतिशय महत्वपूर्ण अंग है। इसीलिए भारत सरकार के योजना आयोग ने महिलाओं को समाज का महत्वपूर्ण घटक मानते हुए उनके विकास के लिए तीन क्षेत्र निर्धारित किए हैं जिनमें पहला शिक्षा, दूसरा स्वास्थ्य और तीसरा परिवार कल्याण है। अतः इन तीनों के प्रति महिलाओं में जागरूकता होना अत्यावश्यक है। प्रस्तुत लेख भोटिया जनजाति की महिलाओ में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण के प्रति जागरूकता के विशलेषणात्मक अध्ययन पर आधारित रहा है।

10.'' महिला सशक्तीकरण में स्व-सहायता समूहों की भूमिका-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन''–डॉ० दिवाकर सिंह राजपूत, एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र एवं समाज-कार्य विभाग डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०), कुन्दन कुमारी, शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र एवं समाज-कार्य विभाग डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

स्व-सहायता समूह के माध्यम से महिला विकास आन्दोलन को देश के विभिन्न भागों में एवं देश के बाहर प्रस्तुत किया गया ताकि महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में परिवर्तन करते हुए उनका चहुँमुखी विकास हो सके। जिसके द्वारा निर्धन तथा गैर-लाभान्वित महिलाओं को लघु बचत एवं समाज क्रियाओं के लिए प्रेरित किया जा सके। इसी दृष्टिकोण को भारत सरकार द्वारा एक कार्यक्रम के रूप में देश के विभिन्न भागों में लागू किया गया। प्रस्तुत लेख महिला सशक्तीकरण में स्व-सहायता समूहों की भूमिका के समाजशास्त्रीय विश्लेषण का एक प्रयास है।

11.'' नास्तिक दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण विवेचना''–डॉ० मृगेन्द्र कुमार सिंह, दर्शन विभाग हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

भारतीय दर्शन परम्पर में दो मुख्य धारायें मिलती हैं नास्तिक एवं आस्तिक। नास्तिक दर्शन को मानने वाले चार्वाक, जैन, बौद्ध वेदों की प्रमाणिकता एवं ईश्वर में विश्वास नहीं करते, इसी कारण उन्हें नास्तिक कहा गया है। भारतीय दर्शन की चिन्तन परम्परा का आधार ज्ञान मीमांसा है। इसमें ज्ञान की उत्पत्ति, स्वरूप, साधनों का विवेचन है। ज्ञान प्राप्त करने के मुख्य तीन साधन माने गये हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द प्रमाण। प्रस्तुत लेख में तीनों नास्तिक दर्शनों में प्रमाणों को किस रूप में स्वीकार किया गया है का विवेचन है। जैसे चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष को ही ज्ञान प्राप्त करने का प्रमाणिक साधन मानता है। जैन दर्शन में तीनों साधनों को स्वीकार किया गया है। जबकि बौद्ध दर्शन में प्रत्यक्ष एवं अनुमान को स्वीकार किया गया है और शब्द प्रमाण को प्रमाणिक नहीं मानते हैं। प्रस्तुत लेख में इन्हीं बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गयी है।

12.'' ग्रामीण शक्ति संरचना एवं वैश्वीकरण''–डॉ. सुभी धुसिया, वरिष्ठ प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ.प्र.), नदीम अहमद अन्सारी, शोध अध्येता, समाजशास्त्र विभाग, दी०द०उ० गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ.प्र.)

वैश्वीकरण विशुद्ध रूप से एक आर्थिक प्रक्रिया है परन्तु इसने समाज से लेकर साहित्य तक को प्रभावित किया है। इसका प्रभाव हमें जीवन के सभी क्षेत्रों में देखने को मिलता है। भारतीय ग्रामीण शक्ति संरचना इन्हीं क्षेत्रों में से एक है। प्रस्तुत लेख वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप ग्रामीण शक्ति संरचना में हो रहे विविध परिवर्तनों को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

13.'' **दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रति महिलाओं की रूचि – एक समाजशास्त्रीय अध्ययन**''–डॉ. आरती रावत, समाजशास्त्र विभाग, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

सांप्रत समाज में दूरदर्शन संचार के साधनों में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रभावशाली माध्यम है। दूरदर्शन पर आज अनेकानेक टी.वी. चैनलों के माध्मय से चौबीस घण्टे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। ये कार्यक्रम सामाजिक समस्याओं से लेकर जीवन की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं का दूरदर्शन कार्यक्रम देखने का समय, उनका पसंदीदा टी.वी. चैनल तथा मनपसंद कार्यक्रमों को जानने का प्रयास किया गया है।

14.'' **साम्प्रदायिक दंगे एवं राजनीतिक नेतृत्व**''–डॉ. सीमा चौधरी, विभागाध्यक्ष / रीडर, राजनीति विज्ञान, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार (उत्तराखण्ड)

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश के कर्णधारों ने भारत में पंथनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की ताकि देश के प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म को अपनाने, आचरण करने एवं प्रचार करने की स्वतंत्रता प्राप्त हो सके। परन्तु विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप पंथनिरपेक्षता की धारणा साम्प्रदायिकता के सामने बौनी साबित होने लगी और समस्या को विकृत करने में राजनीतिक नेतृत्व ने मुख्य भूमिका अदा की। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य साम्प्रदायिक हिंसा एवं संघर्ष के संदर्भ में राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका की समीक्षा करना रहा है।

15.'' **स्त्री शिक्षा : गुणवत्ता एवं प्रशासन की भूमिका**''–कल्पना वर्मा, प्रवक्ता, बी.एड. विभाग, रामा डिग्री कालेज, चिनहट, लखनऊ (उ.प्र.), प्रोफेसर निधिबाला , प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ०प्र०)

शिक्षा सामाजिक सशक्तीकरण के लिए पहला और मूलभूत साधन है। विज्ञान, तकनीकी और सभ्यता की उन्नति के साथ-साथ महिलाओं की भूमिका में जो सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं उसमें शिक्षा विशेषकर गुणवत्ता परक शिक्षा की विशेष भूमिका है। गुणवत्ता परक स्त्री शिक्षा का मुख्य कार्य है स्त्री अधिगम को प्रभावी बनाना, उनके ज्ञान, कौशल, योग्यता को उन्नत करना, उनके अनुभव में वृद्धि करना तथा उनका सामाजिक एवं मानसिक विकास करना। गुणवत्तायुक्त शिक्षा के लिए अनेक कारक उत्तरदायी होते हैं जिनकी पहचान कर प्रशासनिक हस्तक्षेप के द्वारा शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाया जा सकता है। प्रस्तुत लेख इसी विश्लेषण पर आधारित है।

16.'' **स्वास्थ्य संस्कृति एवं बाल-श्रमिकों का स्वास्थ्य** ''–डॉ० राजीव कुमार श्रीवास्तव, प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, महाविद्यालय बॉसडीह-बलिया (उ०प्र०)

भारत में चिकित्सा का संस्कृति के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। अनेकानेक अध्ययनों से भी स्पष्ट होता है कि रोग जैवकीय घटना मात्र नहीं है अपितु उस समूह विशेष के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन से घनिष्ठतः संबंध्ति है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत बाल श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य समस्याओं का उनकी स्वास्थ्य-संस्कृति के संदर्भ में विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

17.'' **भारत में महिला सशक्तीकरण** ''–डॉ० अनुजा गर्ग, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान, श.म.पा.राज. महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.), डॉ. मनोज कुमार त्रिपाठी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ, (उ.प्र.)

महिला सशक्तीकरण एक वैश्विक विषय है जो कि सामाजिक न्याय, समानता एवं समेकित सामाजिक विकास के दर्शन पर आधारित है। सशक्तीकरण से आशय केवल शक्ति का अधिग्रहण नहीं है वरन् यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से महिलाओं में इतनी जागरूकता उत्पन्न की जा सके कि वे स्वावलम्बी बनकर सामाजिक, आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त

कर सकें। प्रस्तुत लेख भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके सशक्तीकरण की दिशा में किए जा रहे शासकीय प्रयासों के प्रकाशन पर आधारित है।

18.“ **गाँधीजी का जीवन-दर्शन** ”–डॉ. अनुराधा कुमारी, व्याख्याता आदिवासी इं. का. ललमटिया, गोड्डा (झारखण्ड)
हजारों वर्षों की सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रतीक एवं भारतीय गणराज्य के निर्माता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एक महान दार्शनिक थे। जिन्होंने जीवन दर्शन को प्रभावित करने वाले सभी पहलुओं पर चिन्तन मनन एवं क्रियान्वयन किया। उनके जीवन दर्शन ने भारतीय जीवन और समाज में एक नूतन क्रान्ति को जन्म दिया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सत्य, अहिंसा और प्रेम के आध्यात्मिक अस्त्र से इतना बड़ा युद्ध कभी नहीं लड़ा गया और न ही जीता गया। प्रस्तुत शोध पत्र गांधी जीवन दर्शन को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

19.“ **भारत में कृषिदासता** ”–डॉ. शिवचन्द सिंह रावत, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर, चमोली (उत्तराखण्ड)

किसी भी व्यवस्था पर उस देश की भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव अनिवार्यतः पड़ता है। अतः कृषि दासता के उदित होने की परिस्थितियों का भारत में योरूप से भिन्न होना स्वाभाविक ही है। प्रस्तुत शोध लेख उन परिस्थितियों एवं कारणों को उजागर करता है जिन्होंने भारत में कृषि दासता को जन्म दिया।

20.“ **प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन** ”–रमेश चन्द्र सिंह, प्रवक्ता बी.एड़. विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोपेश्वर, चमोली (उत्तराखण्ड)

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षक केन्द्रीय भूमिका का निर्वहन करता है। राष्ट्र की युवा पीढ़ी के निर्माण का गुरूत्तर दायित्व शिक्षकों का होता है। इसलिए शिक्षा प्रक्रिया की सफलता शिक्षक की दक्षता, दायित्व बोध एवं कर्त्तव्य निर्वहन की क्षमता पर आधारित होती है। प्राथमिक शिक्षा, जो शिक्षा की आधारशिला होती है, के अंतर्गत दो प्रकार के शिक्षक कार्यरत हैं- प्रथम वे जिन्होंने द्विवर्षीय बेसिक शिक्षक प्रशिक्षण (बी.टी.सी.) प्राप्त किया है और दूसरे वे जिन्होंने बी.एड. के पश्चात छः मास का विशेष बेसिक शिक्षा का प्रशिक्षण (विशिष्ट बी.टी.सी.) प्राप्त किया है। प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत बी.टी.सी. तथा विशिष्ट बी. टी.सी. शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

21.“ **किसानों में कृषि भूमि संरक्षण के प्रति जागरूकताः एक विश्लेषण** ”–प्रकाश लाल शाह, प्रवक्ता (सं०) भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय त्यूनी, देहरादून (उत्तराखण्ड), डॉ. ऋचा लिंगवाल , प्रवक्ता (सं०) भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय जखोली, रुद्रप्रयाग (उत्तराखण्ड),

भारत एक गांवों का देश है देश की जनसंख्या का ७२.२ प्रतिशत भाग गांवों में निवास करता है जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। सांप्रतिक भारत में यह देखा जाता है कि कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु किसान आधुनिक यंत्रों, उन्नत बीजों, रसायनिक खादों का प्रयोग, फसल चक्र बदलना, मौसम के अनुरूप खेतों की सुरक्षा तथा विभिन्न कृषि संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग ले रहा है, जबकि भूमि संरक्षण, जो अच्छे उत्पादन के लिए अत्यावश्यक है, के प्रति उदासीन अथवा शिथिल हो जाता है। उत्तराखण्ड के रूदप्रयाग जनपद पर आधारित प्रस्तुत अध्ययन भूमि संरक्षण के प्रति किसानो की जागरूकता के मूल्यांकन का एक प्रयास रहा है।

22.“ **जरी जरदोजी में संलग्न महिलाओं की आय और परिवार के आकार में सहसंबंधः एक सांख्यिकीय अध्ययन** ”–डॉ. जागेश मलिक, विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान विभाग, चौधरी हरचन्द सिंह कालेज, खुर्जा (उ.प्र.)

बरेली महानगर में महिलाओं द्वारा परिवार की आय बढ़ाने के उद्देश्य से घर पर रहकर किये जाने वाले कार्यों में जरी जरदोजी प्रमुख है। विगत वर्षों में बड़े नगरों में इसकी बढ़ती मांग तथा इसके निर्यात की संभावनाओं ने इस कार्य में

आय की संभावनाओं में भी वृद्धि की है। प्रस्तुत लेख बरेली महानगर में जरी जरदोजी कार्य में संलग्न महिलाओं की वार्षिक आय और उनके परिवार में आकार में सहसंबंध स्थापित करने के सांख्यिकीय प्रयास पर आधारित है।

23.“ महिला सशक्तीकरण और महिला अधिकार ”–डॉ. रीता अग्रवाल,एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री अग्रसेन कन्या पी.जी. कॉलेज, वाराणसी (उ०प्र०), डॉ. अनीता अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, वाराणसी (उ०प्र०)

वैश्विक स्तर पर लोकतांत्रिक व्यवस्था जैसे - जैसे सुदृढ़ होती गई, महिलाओं को पुरूषों के समकक्ष लाने की मुहिम में भी तेजी आती गई। विधि एवं न्याय के समक्ष समानता, लोक सेवाओं में नियुक्ति हेतु समान अवसर, विचार अभिव्यक्ति, निवास, रोजगार आदि की स्वतंत्रता, पारिवारिक सम्पत्ति में हिस्सेदारी, निर्णयन के प्रत्येक स्तर पर समानता, खान-पान, रहन-सहन, शिक्षा के क्षेत्र में समानता आदि मामलों में महिलाओं को न केवल पुरूषों के बराबर लाया गया, वरन् जहां कहीं आवश्यकता थी, वहां उनके सम्मान एवं निष्ठा की रक्षा के लिए विशेष प्रावधान भी किए गए। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत अंतराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर महिला सशक्तीकरण हेतु किए गए वैधानिक प्रयासों की व्याख्या की गई है।

24.“ सर्वशिक्षा अभियान : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन ”–डॉ. अनुराधा गोयल, असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बरेली कॉलिज, बरेली (उ.प्र.)

शिक्षा का उद्देश्य बालक में मानसिक अध्यात्मिक, सामाजिक एवं भौतिक गुणों का विकास करना है जिससे वह अपने सम्पूर्ण वातावरण के साथ सफल अनुकूलन कर सके। इसी दृष्टि से चार दशक पूर्व ‘यूनिवर्सिल डिक्लेरेशन आफ ह्यूमन राइट्स’ के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व ने यह स्वीकार किया था कि शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है। प्रस्तुत लेख भारत में सर्वशिक्षा अभियान कार्यक्रम की स्थिति एवं विकास को प्रकाशित करने का एक प्रयास है।

25.“ ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन ”–डॉ. अंजू बेनीवाल, समाजशास्त्र विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात योजनाबद्ध विकास प्रारंभ किया गया। पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विशेष प्रयत्न किए गए। सरकार द्वारा ग्रामीण विकास हेतु अनेकानेक योजनाएं चलाई गईं। इन सबके फलस्वरूप गांवों में विकास की प्रक्रिया दिखाई देने लगी है आज गांव के लोग भी परिवर्तन चाहने लगे हैं। प्रस्तुत लेख में राजस्थान के दो गांवों, एक अधिक विकसित दूसरा कम विकसित में सरकार द्वारा ग्रामीण विकास हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

२६.“ समसामयिक कानून एवं महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा”-नीतू सिंह, शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, उदय प्रताप स्वा० महाविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

स्वतन्त्रता के उपरान्त भारत में वैयक्तिक कानून या अपराधिक कानून एवं श्रम-कानून में विविध प्रकार के परिवर्तन हुए हैं जिससे महिलाओं के अधिकार की सुरक्षा हो और उनकी समानता सुनिश्चित हो। इन कानूनों के विविध पक्षों में परिवर्तन महिला आन्दोलन के प्रयास एवं मांग का प्रतिफल रहा है। इन कानूनों में हुए परिवर्तनों के उपरान्त भी महिलाओं पर बढ़ती हुई नृशंसता आश्वस्त करने में सफल नहीं रही है। प्रस्तुत लेख इसी स्थिति को स्पष्ट करने का एक प्रयास रहा है।

27.“ पर्यटन के संदर्भ में उत्तराखण्ड के चार धामों की भूमिका ”–कु. सोहनी सेमवाल ,शोध अध्येत्री, राजनीति विज्ञान विभाग, हे० न० ब० ग० विश्वविद्यालय श्रीनगर-गढवाल (उत्तराखण्ड)

उत्तराखण्ड में स्थित प्रसिद्ध चार धाम - बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री अनादि काल से भारत ही नहीं विदेशी यात्रियों को भी आकर्षित करते रहे हैं। इन चारो धामों के अतिरिक्त भी यहां सैंकड़ों दर्शनीय मंदिर एवं तीर्थस्थल हैं। प्रस्तुत लेख में इस तथ्य को उजागर करने का प्रयास किया गया है कि इन तीर्थ स्थलों की महत्ता धार्मिक दृष्टि से ही नहीं अपितु पर्यटन की दृष्टि से भी उत्तराखण्ड के लिए इनका अद्वितीय योगदान है।

28.“ बालिका शिक्षा हेतु कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की स्थापना : एक सार्थक पहल ”–गजपाल रामराज,शोध अध्येता, शिक्षा विभाग, हे०नं०ब०ग०वि०वि०, श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड), मंजू कठैत शोध अध्येत्री, शिक्षा विभाग, हे०नं०ब०ग०वि०वि०, श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

भारतीय संस्कृति के अंतर्गत महिलाओं को सदैव सम्मानजनक स्थान दिया जाता रहा है किन्तु इसके बावजूद कतिपय रूढ़िगत कारणों से एक लम्बे समय तक महिलाओं को शिक्षा से विमुख रखा गया। देश के संपूर्ण विकास में बालिका शिक्षा की अहम भूमिका है। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए स्वतंत्रोपरांत भारतीय संविधान ने पुरूष तथा स्त्री को पूर्णरूपेण समान दर्जा देते हुए बालिका शिक्षा को एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता के रूप में स्वीकार किया है। प्रस्तुत लेख में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की स्थापना को इस दिशा में एक सार्थक पहल के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

29. पुस्तक समीक्षा–पुस्तक - भारत में अस्पृश्यता-एक ऐतिहासिक अध्ययन, लेखक : डॉ. सी.एल. सोनकर समीक्षक- प्रोफेसर यू.पी.अरोड़ा, प्रोफेसर ग्रीक चेयर, स्कूल ऑफ लेंग्विज लिटरेचर एण्ड कल्चरल स्टडीज, जे.एन.यू., नई दिल्ली

30. पुस्तक समीक्षा–पुस्तक-आगस्त कोंतः यात्रापुरूष, लेखक : प्रोफेसर श्यामधर सिंह, पूर्व प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, समीक्षक- प्रोफेसर. ए.पी. सिंह, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

31. पुस्तक समीक्षा– पुस्तक : Instruments of Social Research, लेखक - प्रोफेसर जसपाल सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र, गुरू नानकदेव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब), समीक्षक- प्रोफेसर श्यामधर सिंह, पूर्व प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)